# भारत में बेहतर रोजगार, लौट रहे हैं एनआरआई

दीपिका शर्मा

'जब दीया अपने घर का हो तो रोशनी भी पहले अपनी ही चौखट को मिलनी चाहिए।' ब्रेन-ड्रेन की समस्या से भारत पिछले कई वर्षों से जूझ रहा है। इसमें कोई शक नहीं है कि काबिलियत और मेहनत के मामले में हम भारतीय काफी आगे हैं। शायद यही कारण रहा कि अधिकांश लोग अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद विदेश जाकर पैसा कमाना पसंद करने लगे। लेकिन भारत की मजबूत होती अर्थव्यवस्था ने हाल ही में आंकड़ों में भारी फेरबदल किया है। विस्तृत तकनीक और रोजगार के नए आयामों के कारण भारत में जॉब स्टैंडर्ड और लोगों की सेलरी में काफी सुधार आया है। विस्तार करती ग्लोबल इकोनॉमी के तौर पर भारत एनआरआई के लिए एक हब बनता जा रहा है और बहुराष्ट्रीय कंपनियां जिस रफ्तार से यहां पांव पसार रही हैं, उस हिसाब से एनआरआई खुद को यहां आसानी से जुड़ा हुआ मानते हैं।

## भारत में एनआरआई के लिए कुछ खास

नियुक्ति करने वाली कंसलटेंसी कंपनी कैली सर्विस इंडिया द्वारा किए गए एक ताजा शोध के अनुसार भारत में नौकरियों की संख्या इस हिसाब से बढ़ रही है कि वर्ष 2015 तक करीब 3 लाख एनआरआई भारत में वापस आने वाले हैं।

**वापस आने के कारण :** ओवरसीज की तुलना में भारत के बाजार के अधिक मजबूत होने, तुलनात्मक अधिक विकास के अवसर तथा अपने घर से नजदीकी।

## वर्तमान परिप्रेक्ष्य

'द चोपड़ा' के चेयरमैन नवीन चोपड़ा ने बताया कि 1.5 से 2 लाख छात्र हर साल भारत से विदेश पढ़ाई करने जाते हैं। इस हायर स्टडीज में बिजनेस कोर्स, इंजीनियरिंग, हेल्थ साइंस जैसे कोर्स का काफी बोलबाला है। नौकरियां की अगर बात की जाए तो सबसे ज्यादा भारतीय यूएस, यूके, कनाडा, न्यूजीलैंड, दुबई तथा आस्ट्रेलिया में जाकर बसना पसंद करते हैं। वहीं दूसरी तरफ, मंदी की वजह से करीब 60 प्रतिशत छात्र भारत लौट आते हैं। नवीन चोपड़ा ने बताया कि छात्र किसी की नकल करके बाहर जाने का न सोचें। अब तो भारत में भी हर तरह के कोर्स उपलब्ध हैं। ऑफिस कल्चर से लेकर लिविंग स्टैंडर्ड तक, भारत में हर वर्ग में सुधार देखा जा रहा है।

## एनआरआई के लिए आरक्षण

आईटी, इंजीनियरिंग, डॉक्टरी, मार्केटिंग, इंवेस्टमेंट बैंकिंग आदि कई ऐसी प्रोफेशनल फील्ड हैं जिन में पैसा भी काफी अच्छा है और ये एनआरआई को वापस भारत खींच रही हैं। पिछले कुछ वर्षों में आर्ट, फैशन तथा एंटरटेनमेंट जैसी फील्ड में काफी तरक्की हुई है। आविष्कार हो रहे हैं, इंटरप्रिन्योर का बोलबाला है और लोगों को मनचाहे पैकेज पर नौकरियां मिलती जा रही है। और एक एनआरआई के लिए इससे अच्छी बात क्या हो सकती है कि वो वापस अपने देश आ रहा है, अपने लोगों के बीच, अपने परिवार के करीब।

बाहर से पढ़ाई करके वापस आने के बाद यहां आपको तवज्जो भी ज्यादा दी जाती है। और सबसे बड़ी बात यूएस, यूके या कनाडा जैसे देशों की तुलना में भारत में लग्जरी, कम्फर्ट तथा एक ऊंचा लिविंग स्टैंडर्ड काफी कम दाम में उपलब्ध हो सकता है। अपना सर्किल डॉट कॉम के सीईओ योगेश बंसल ने बताया कि 1999-2000 में जब डॉट कॉम इंडस्ट्री ने भारत में कदम रखा तब हमारी वृद्धि की रफ्तार बहुत धीमी थी। आज न सिर्फ तकनीक में हमने उन्नति की है बल्कि लोगों के माइंड सेट भी बदले हैं। कंप्यूटर को बहुत डरते-डरते हाथ लगाने वाला इनसान भी आज बेधड़क अपना मोबाइल फोन पर मल्टी-मीडिया फाइल्स डाउनलोड कर रहा है।

हम ऑनलाइन शॉपिंग करना सीख गए हैं। लोग अपने रिश्तेदारों से या दोस्तों से इंटरनेट के जरिए हर पल जुड़े रह सकते हैं। पूरे विश्व के साथ-साथ भारत भी तेजी से बढ़ रहा है। अब विदेश में कुछ अनोखा नहीं रहा गया। जब सब कुछ यहां अपने देश में आसानी से उपलब्ध हो सकता है तो फिर अपने परिवार से दूर क्यों रहा जाए? भारत में रीसेशन का दौर जा चुका है। और धीमी रफ्तार से ही सही पर हमारी जीडीपी दर भी वृद्धि कर रही है। तो कदम बढ़ाइए और अपनों को और करीब लाइए। हमारी व्यक्तिगत वृद्धि देश के विकास से सीधे तौर पर जुड़ी हुई है।